IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"'ना धिं धिं ना' के पर्यायवाची पं0 अनोखे लाल मिश्र "

मोनिका सिंह
डॉ. शिवेन्द्र प्रताप त्रिपाठी
दयालबाग शिक्षण संस्थान, दयालबाग, आगरा

बनारस पुरातन काल से संस्कृति एवं संगीत का प्रधान केन्द्र रहा है। तबला वादन में बनारस घराना जग प्रसिद्ध है। यहाँ एक से एक तबलावादक हुए हैं जिन्होंने देश–विदेश में भारत के गौरव में वृद्धि की है। उसी गौरवशाली कड़ी में तबला सम्राट पं. अनोखे लाल मिश्र का नाम आता है।

पं. अनोखेलाल जी का जन्म सन् 1914 ई. में भारत के उत्तर प्रदेश के ग्राम ताजपुर तहसील–सकलहीड़ा, जिाल–चन्दौली में हुआ था। इनके पिता पं. बुद्ध प्रसाद मिश्र जी एक प्रसिद्ध सारंगी वादक थे। जब पं. अनोखे लाल जी मात्र ढाई वर्ष के थे तभी इनके पिताजी और मात्र 6 वर्ष की अवस्था में इनकी माताजी का स्वर्गवास हो गया था इनका पालन पोषण इनकी दादी जानकी देवी ने किया। भैरव प्रसाद मिश्र जी से तबला वादन की शिक्षा दिलाने लगीं।

प्राचीन परम्परानुसार गुरुगृह में सभी कार्य स्वयं करना पड़ता था। पं0 अनोखे लाल जी की ग्रहण–शक्ति, मेघा तथा धारणा शक्ति इतनी तीव्र थी कि गुरू–मुख से निकली हुए एक–एक बात शीर्घ ही ग्रहण कर लेते थे। पंडित जी तबले के बोलों को ईश्वर के नाम की तरह उसी श्रद्धा से जपते थे। वे सारे बोल जिन्हें उन्होंने जपा सभी सिद्ध हो गये।

पंडित अनोखे लाल मिश्र जी अभ्यास को अभ्यास नहीं बोलते थे बल्कि 'ठाकुर–सेवा' "ईश्वर की अराधना" जैसे सारगर्भित शब्द का प्रयोग करते थे। उनके दैनिक अभ्यास में कुछ कायदे अवश्य होते थे जिनमें "धाऽतिरकिटतक, तकतिरकिटतक, धिरधिरकिटतक, धिनगिन, धाड़ागिन, दिनतक, धिडनग इत्यादि" तथा अभ्यास का एक चक्र पूरा करने के पहले अन्तिम एक घण्टा धा धिं धिं धा अवश्य अभ्यास करते थे। पंडित जो खड़ी अंगुली का ना धिं धिं ना बधाते थे, ना धिं धिं ना के जादूगर थे। वे ना धिं धिं ना का रियाज छह घंटे करते थे, धिरधिरकिटतक का रियाज चार घंटे करते थे। प्रारम्भ में जोरदार अभ्यास के कारण पास–पड़ोस से शिकायत भी मिली वे प्रतिष्ठित व्यक्ति थे, इसलिए हमेशा अपने मान–सम्मान का ध्यान रखते। किसी को कष्ट देना उन्हें पसंद नहीं थी।

पंडित जी के वादन में पटाक्षर (तबला या मृदंग के बोल) शुद्ध एवं स्पष्ट थे, ध्वनि में आस की निरंतरता बनी रहती थी। दाब–गॉस (उपयुक्त वजन) के प्रेणता थे। वे सदैव ध्यान में डूबकर ही वादन करते थे। इसीलिए उनके वादन का मिठास श्रोता को तन्मय कर देता था।

कायदा, बाँट, रेला, गत, फर्द त्रिपल्ली, चौपल्ली, तिहाई, टुकड़ा, लग्गी, लड़ी ठेका, जिसका भी वादन करते, अतिद्रुत लय में भी वह बोल इतना सुस्पष्ट सुनाई देता विशेष रूप से त्रिताल के ठेके को अतिद्रुतलय की चरमसीमा तक स्पष्ट रूप से बजाकर विशेष मानदण्ड स्थापित करने वाले पं. अन्नेखेलाल जी अपने युग के एक मात्र तबला वादक थे जो देश के अत्यंत द्रुतलय के गायकों–वादकों एवं नर्तकों के मध्य शीर्षस्थ मानदण्ड के रूप में स्थापित थे। **बनारस का प्राचीन बाँट**

धीग	धीना	तिरकिट	धना	धागे	नाती	कती	नाड़ा
x				2			
तीक	तीना	तिरकिट	धना	धागे	नाधी	गधी	नाड़ा
0				3			

यह बाँट उनको बहुत प्रिय था, जिसे अक्सर बजाया करते थे। तबले में पूरे हाथ का एक ही बोल है "धिरधिर", जिसमें उन्होंने अभ्यास द्वारा अद्वितीय सिद्धि प्राप्त की था।

बनारस का प्रसिद्ध कायदा :–

धातिरकिटतक	धिरधिरकिटतक	धिरधिरधिरधिर	धिरधिरकिटतक
x			
धातिरकिटतक	धिरधिरकिटतक	धातिरकिटतक	तातिरकिटतक
2			
तातिरकिटतक	तिरतिरकिटतक	तिरतिरतिरतिर	तिरतिरकिटतक
0			
धातिरकिटतक	धिरधिरकिटतक	धातिरकिटतक	धातिरकिटतक
3			

निष्कर्ष – पंडित जी ने मानव–जाति के भविष्य की सबसे महत्वपूर्ण एवं अनिवार्य निश्चय प्रस्तुत कर अपने सत्कर्म से यह स्पष्ट कर दिया है कि यह भारत है जो इस सर्वोच्च नियति के लिए नियत है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

- तबला पुराण – पं. विजय शंकर मिश्र
- काशी की संगीत परम्परा :– पं. कामेश्वर मिश्र
- तबले का उद्‌गम विकास और वादन शैलियाँ डॉ. योगमाला शुक्ल
- तालकोश :– श्री गिरिश चन्द्र श्रीवास्तव